आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023

Received: 07/09/2023; Accepted: 14/09/2023; Published: 24/06/2023

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा का सृजन व विकास

डॉ. विजय कुमार
राँची, झारखण्ड
मो.नं.-9113438390, 80511153860
ई-मेल : vijaypro1320@gmail.com

डॉ. विजय कुमार, **वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा का सृजन व विकास**,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 4/सितंबर 2023,(407- 411)

वस्तुत: हिन्दी का सृजन एवं विकास विश्व पटल पर बहुत ही व्यापक और विस्तारपूर्वक हुआ है। बहरहाल हिन्दी शब्द की उत्पत्ति भारत के उत्तर-पश्चिम में प्रवाहमान सिंधु नदी से संबंधित है। विदित है कि अधिकांश विदेशी यात्री और आक्रान्ता उत्तर-पश्चिम सिंह द्वार से ही भारत आये। भारत में आने वाले इन विदेशियों ने जिस देश के दर्शन किए वह 'सिन्धु' का देश था। ईरान (फारस) के साथ भारत के बहुत प्राचीनकाल से ही संबंध थे और ईरानी 'सिंधु' को 'हिन्दु' कहते थे। सिंधु हिन्दु स का ह में तथा ध का द में परिवर्तन हो गया। (पहलवी भाषा प्रवृत्ति के अनुसार ध्वनि परिवर्तन)।

ईरानी लोग के उच्चारण सिंधु - इस प्रकार 'हिन्दी' शब्द का विकास हिन्दू-हिन्द-ई-हिन्दी।'[1]

'हिन्दी' शब्द का संबंध शब्द 'सिंधु' से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आसपास की भूमि को 'सिंधु' हिंदू और फिर 'हिंद' हो गया और इसका अर्थ हुआ 'सिंध प्रदेश'। इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा 'हिंदीक' बना, जिसका अर्थ है हिंद का। 'हिन्दी' शब्द मूलतः फारसी है। वस्तुतः शब्दों में अरबी, फारसी तथा संस्कृत के आधिक्य की बात छोड़ दें तो हिन्दी और उर्दू में कोई खास अंत नहीं है। दोनों ही एक ही भाषा की दो शैलियाँ हैं। इसलिए प्रारंभ में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग हिन्दी और उर्दू दोनों के लिए होता था। जैसे - सूफी कवि नूर मुहम्मद ने कहा है, "हिन्दू मग पर पांव न राख्यौ, का बहुतै जो हिन्दी भाष्यौ।"[2]

'हिन्दी' जिस भाषा-धारा के विशिष्ट दैशिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में उसका प्राचीनतम रूप संस्कृत है। संस्कृत का काल मोटे रूप से 1500 ई०पू० से 500 ई०पू० तक माना जाता है। इस काल में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। संस्कृत भाषा के दो रूप मिलते हैं, एक भाषा वैदिक संस्कृत है, जिसमें वैदिक वाङ्मय की रचना हुई है और दूसरी लौकिक संस्कृत है, जिसमें वाल्मीकि, व्यास, भास, अश्वघोष, कालिदास, माघ जैसे सुप्रसिद्ध रचनाकारों की क्रमशः रामायण, महाभारत, उरूभंग, बुद्धचरितम्, मेघदूतम् एवं शिशुपाल वध इत्यादि रचनाएँ हुई है।

संस्कृतकालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते-होते 500 ई०पू० के बाद प्रवृत्तितः काफी बदल गयी, जिसे 'पालि' कही गयी। इसका काल समय 500 ई०पू० से पहली ईसवी तक है। जिसमें बौद्ध ग्रंथों में पालि का जो रूप मिलता है, वह इस बोलचाल की भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप था।

इसी प्रकार पहली ईस्वी तक आते-आते यह बोलचाल की भाषा और परिवर्तित हुई। अतः पहली ईस्वी से 500 ई० तक की भाषा 'प्राकृत' नाम से अभिहित हुई। प्राकृतों से ही विभिन्न क्षेत्रीय अपभ्रंशों का विकास हुआ। अपभ्रंश भाषा का काल मोटे रूप से 500 ई० से 1000 ई० तक है। आज के प्राप्त अपभ्रंश साहित्य में मुख्यतः पश्चिमी और पूर्वी दो ही भाषा रूप मिलते हैं। किंतु प्राकृत के मुख्यतः पांच क्षेत्रीय रूपों तथा आज की नौ (लहंदा, पंजाबी, सिंधी, गुजराती, मराठी, हिन्दी, उड़ीसा, बांग्ला और असमिया) है।

इस प्रकार से हम देख सकते हैं कि शौरसेनी अपभ्रंश से पश्चिमी हिन्दी भाषा का उदय हुआ है और पश्चिमी हिन्दी भाषा से बोलियों का विकास हुआ है। पश्चिमी हिन्दी भाषा - खड़ी बोली का विस्तृत विस्तार हुआ है। जो इस तरह देख सकते हैं -

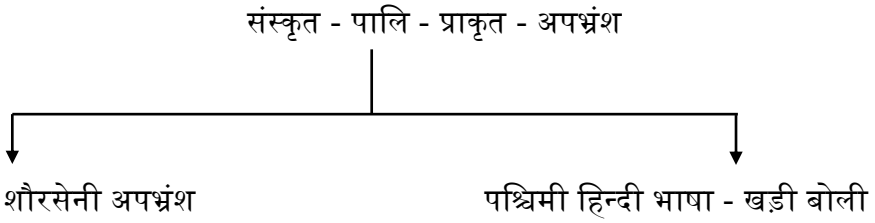

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी भाषा का व्यापक और विस्तार देने का श्रेय हमारे हिन्दी साहित्य को जाता है। जिसमें प्रारंभिक काल से ही (आदिकाल) अपभंरश/ऊपहट्ट/पुरानी हिन्दी का प्रचलन शुरू हो चुका है। जहाँ अवहट्ट/पुरानी हिन्दी में काव्य रचनाएँ आरंभ हो चुकी थी। जिसमें विद्यापति की कुछ काव्य रचनाएँ (कीर्तिलता, कीर्तिपताका) अवहट्ट में आयी। यद्यपि अपभ्रंश अपने मूल रूप में ही पंद्रहवीं शताब्दी तक साहित्य की भाषा बनी रहे, तथापि आठवीं शताब्दी से ही बोलचाल की भाषा पृथक होकर उसके समानांतर साहित्य-रचना का माध्यम बना। इसी भाषा को कुछ विद्वानों ने 'उत्तर अपभ्रंश' या 'पुरानी हिन्दी' कहा है और कुछ विद्वानों ने 'अवहट्ट' नाम दिया है। परन्तु वास्तविकता यह है कि वह भाषा 'हिंदी' है, उसे 'उत्तर अपभ्रंश' या 'अवहट्ट' नाम देना भ्रम उत्पन्न करना है। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी पहले विद्वान है, जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा की थी कि 'उत्तर अपभ्रंश ही पुरानी हिन्दी है।'[3]

तो वहीं हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने अपभ्रंश और हिन्दी के संबंध में यह मत व्यक्त करते हैं : "इस प्रकार दसवीं से चौदहवीं शताब्दी का काल, जिसे हिंदी का आदिकाल कहते हैं, भाषा की दृष्टि से अपभ्रंश का ही बढ़ाव है। इसी अपभ्रंश के बढ़ाव को कुछ लोग उत्तरकालीन अपभ्रंश कहते हैं और कुछ लोग पुरानी हिन्दी/बारहवीं शताब्दी तक निश्चित रूप से अपभ्रंश भाषा ही पुरानी हिन्दी के रूप में चलती थी, यद्यपि उसमें नये तत्सम् शब्दों का आगमन शुरू हो गया था।"[4]

अतः भाषा के विकास की आरंभिक स्थिति से हिन्दी साहित्य के आदिकाल का आरंभ होता है। जिसमें सरहपाद, विद्यापति, अब्दुर रहमान, दामोदर पंडित, ज्योतिरीश्वर ठाकुर इत्यादि कवियों को

अपभ्रंश का कवि मान लेने के पश्चात् प्रारंभिक हिन्दी का प्रयोग देखकर उसे हिन्दी का आरंभिक कवि मानने से इंकार नहीं किया जा सकता।

तो वहीं सर्वप्रथम खड़ी बोली में काव्य, पहेलियाँ, लोकोक्तियाँ इत्यादि रचने का श्रेय अमीर खुसरो को जाता है। जिन्होंने खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्वयं अमीर खुसरो लिखते हैं कि "तुर्क हिन्दुस्तानिन्दम मैं हिन्दवी गोषम जवाबे। .....जुज वै चन्द नज्म हिन्दी नीज नज्जर देस्तान करदा शुदा अस्त।" खुसरो की 'खतिकबारी' में 'हिन्दवी' शब्द 30 बार और 'हिन्दी' शब्द 5 बार देशी भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है।"[5]

बहरहाल हिन्दी भाषा के विकास क्रम को आगे बढ़ाने में आदिकाल का बेहतरीन योगदान रहा है। सन् 1800 ई० में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज के दो भाषा विद्वान लल्लू लाल जी और सदल मिश्र का महत्वपूर्ण उल्लेखनीय योगदान और कॉलेज के अन्दर हिन्दी भाष के संदर्भ में विशेष रूप से उत्कृष्ट सहभागिता रही है। इसी प्रकार से हिन्दी भाषा को श्रेष्ठतम् बताते हुए सन् 1875 ई० में बाबू केशवचन्द्र सेन ने लिखा है - "हिन्दी भाषा प्रायः सर्वत्र ई प्रचलित।"[6]

तो वहीं 1876 ई० में बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 'बंगदर्शन' में लिखा है - "हिन्दी शिक्षा ना करिले, कोनो क्रमे ई चलिबे ना।"[7] जैसे हिन्दी भाषा के संबंध में श्रेष्ठ महान विद्वानों की वाणी मिलती है।

अब आगे हिन्दी के विकास में निरंतरता लाने का श्रेय आधुनिक काल के आरंभिक कहानीकारों एवं कवियों का अतुलनीय सामूहिक योगदान रहा है, जिसमें हिन्दी भाषा को स्थिर, स्थापित, प्रतिष्ठित और श्रेष्ठ बनाने का काम 'सरस्वती' तथा 'सुदर्शन' नामक हिन्दी पत्रिकाओं का रहा है। भारतेन्दु युग (1850 ई०) से लेकर समकालीन कविता (1990 से अबतक) तक हिन्दी भाषा का वृहत विस्तार और सौन्दर्यकरण का वर्ष रहा है।

फिर स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी भाषा अपनी अस्तित्व एवं स्वामित्व की ओर बढ़ रही थी। हिन्दी राजभाषा के रूप में उदित विकसित हो रही थी। भारत का संविधान बनने और लागू होने के पश्चात् हमारी हिन्दी राजभाषा के रूप में पूरे भारतवर्ष में परिनिष्ठत हो गई।

भारतीय संविधान के अनुसार भाग-17 अनुच्छेद-343(1) से अनुच्छेद 351 तक में हिन्दी भाषा को संवारा और सजाया गया है। जिनमें संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है। हिन्दी को 14 सितम्बर, 1949 ई० को संवैधानिक रूप से राजभाषा घोषित किया गया। इसीलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। राजभाषा के विकास से संबंधित विभिन्न संस्थाओं की स्थापना हुई है। जिनमें (1) साहित्य अकादमी (1954 ई०), (2) केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (1960 ई०), (3) केन्द्रीय हिन्दी समिति (1967 ई०), (4) राजभाषा विधायी आयोग (1965 ई०) तथा (5) राजभाषा विभाग (1975 ई०) महत्वपूर्ण रूप से कार्य कर रही है।

इसी पर सी० राजगोपालचारी कहते हैं - "मैं कभी भी हिन्दी का विरोधी नहीं है। मैं उन हिन्दी वालां का विरोध करता हूँ जो वस्तुस्थिति को नहीं समझकर अपने स्वार्थ के कारण हिन्दी को लादने

की बात सोचते हैं और हिन्दी लोगों के लिए ठीक उतनी ही विदेशी है, जितनी कि हिन्दी समर्थकों के लिए अंग्रेजी।"[8]

इस प्रकार, आजादी से पहले और आजादी के बाद हिन्दी भाषा का अस्तित्व पूरे वैश्विक परिदृश्य में तेजी से प्रचार-प्रसार कर रही है। 'हिन्दी' भाषा को पूरे वैश्विकता में अपनी पहचान बनाने में हमारी हिन्दी सिनेमा का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय सिनेमा ने हिन्दी भाषा को वरन् भारतवर्ष में हिन्दी को वृहद् और मजबूत बनाया है, बल्कि देश से बाहर विदेशों में भी हिन्दी भाषा का गौरव, मान-सम्मान बढ़ाया है। हिन्दी सिनेमा का आरंभ सन् 1896 ई० में लूमियर ब्रदर्श ने बंबई एक होटल में फिल्म का पहला शो दिखाया और इसी दिन भारतीय सिनेमा का जन्म माना जाता है। शुरूआती दौर में सिनेमा अपने बाल्यकाल में भी और सन् 1913 ई० में दादा साहेब फालके द्वारा निर्देशित 'राजा हरिश्चन्द्र' मूल फिल्म बनाई गई, जो पूरे भारत में लोकप्रिय हुई। समय बदल और गूंगी फिल्मों ने बोलना सीखा, वर्ष 1931 ई० को पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' आर्देशिर ईरानी द्वारा निर्देशित हुई। फिर आजाद भारत ने अपनी हिन्दी सिनेमा को एक नई दिशा दी, क्योंकि 1948 ई० में फिल्म प्रभाग की स्थापना हुई। यहाँ से हिन्दी सिनेमा नई चाल में ढली। हिन्दी भाषा इतनी सरल, सहज है कि हरेक के जुबाँ में आसानी से आ जाती है और सिनेमा को आगे बढ़ाने का मील का पत्थर साबित हुआ यह भाषा।

भारतीय हिन्दी सिनेमा ने 'हिन्दी' को वैश्विक परिदृश्य में एक नई पहचान दी। हम कह सकते हैं कि हमने हमारे भारतवासी ने स्वतंत्रता के बाद हर कार्यक्षेत्र में हिन्दी को बढ़ावा मिला। चाहे वह कार्यकाल सरकारी कार्यालय हो, गली, मुहल्ला, कोचा, गांव, शहर सभी जगह राजभाषा हिन्दी ने ले लिया है, क्योंकि हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी भाषा में 'हिन्दी फीचर फिल्म' बनाकर नई ऊँचाईयाँ दी है। फिर आजाद भारत में एक नई क्रांति आयी और वह 'इलेक्ट्रोनिक क्रांति' (1960 ई०)। जहाँ कमप्यूटर, टी०वी०, कलाई घड़ी इत्यादि का दौर आया। जिनमें श्वेत और श्याम, टी०वी० के आगमन से 'हिन्दी' की नई ऊर्जा मिली। सन् 1959 में सबसे पहले दिल्ली में दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना हुई। निरंतर विकासशील के दौर में सन् 1982 ई० में रंगीन टी०वी० का उदय हुआ। जहाँ भारतीय परिदृश्य में रंगीन टी०वी० घर-घर पहुँच गयी थी और हिन्दी भाषा भी। उस दौर की रामायण, महाभारत, चंद्रकांता जैसे धारावाहिक ने हिन्दी भाषा के माध्यम से लोगों को जोड़ने का काम किया है। लोग कहते हैं और मैंने सुना है कि जिनके घर में टी०वी० नहीं था, वे अगल-बगल, पड़ोस के घर में जाकर टी०वी० देखने की भीड़ लगी रहती थी। सब गांव, घर मिलकर बिना किसी भेदभाव के भी देखने जाते थे। यही हमारा सबसे बड़ा एकता और सामाजिक सौहार्द्र खुशी का प्रतीक नजर आता है। इसी पर फिल्मकार कमलास्वरुप कहते हैं - "सिनेमा अनुभूति और संवेदना, व्यष्टि और समष्टि के संबंध का विज्ञान है। विभिन्न नाट्य एवं ललित कलाओं का सम्मिश्रण है। किसी घटना के काल और दिकू के आयामों का रूपांकन है।"[9]

इस प्रकार हिन्दी सिनेमा और टेलीविजन अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशाली एवं सशक्त माध्यम है। हिन्दी फिल्मों के गीतों ने भारतवर्ष के जन-जन तक पहुँचाया है और लोगों को जोड़ने का काम किया है। "इसमें कोई दो राय नहीं है कि सिनेमा सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सभी स्थितियों को आत्मसात करते हुए रचनात्मक माध्यम बना है। कहानी, उपन्यास, संस्मरण, नाटक, कविता, रिपोर्ताज, रेखाचित्र सभी को सिनेमा ने एक सशक्त अभिव्यक्ति दी है। हिन्दी सिनेमा सृजनात्मक और यांत्रिक प्रतिभा का सुन्दर संगम बन गया है।"[10]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आज हमारा हिन्दी भाषा खड़ी बोली के रूप में काफी विकसित और समृद्ध हो रहा है। भारतीयता के परिदृश्य में यह भाषा अपने गगनरूपी रथ पर सवार है और पूरे विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ते जा रही है। इसका उदाहरण हम अपने माननीय प्रधानमंत्री के द्वारा देख सकते हैं। देश-विदेशों में अपना भाषण हिन्दी में ही बोलते हैं, इससे प्रतीत होता है कि वैश्विक पटल पर हिन्दी अपनी सर्वोच्च स्थान पर है। सम्पूर्ण भारतवर्ष नागरिकों के सहयोग से हिन्दी बोलचाल, सम्प्रेषण, अभिव्यक्ति की सर्वश्रेष्ठ और प्रथम भाषा बनकर उभरी है।

संदर्भ सूची :

1. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट प्रकाशन, प्रथम संस्करण-2007, पटना, पृष्ठ-2
2. डॉ० नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1973, नई दिल्ली, पृष्ठ-11
3. वही, पृष्ठ-43
4. वही, पृष्ठ-44
5. डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, भारती भवन प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1959, पटना, पृष्ठ-8
6. वही, पृष्ठ-9
7. वही, पृष्ठ-9
8. संजीव कुमार, सामान्य हिन्दी, लूसेंट प्रकाशन, प्रथम संस्करण-2007, पटना, पृष्ठ-13
9. सं० संजय सहाय, हिन्दी सिनेमा के सौ साल, हंस, फरवरी 2013, नई दिल्ली, पृष्ठ-122
10. डॉ० देवेन्द्रनाथ सिंह और डॉ० विरेन्द्र सिंह यादव, भारतीय हिन्दी सिनेमा की विकास यात्रा, पेसिफिक पब्लिकेशन, 2012, नई दिल्ली, पृष्ठ-10

****